# प्रथम अध्याय

# समय के बरअक्स उदय प्रकाश का व्यक्ति और कृतिकार

# प्रथम अध्याय

## समय के बरअक्स उदय प्रकाश का व्यक्ति और कृतिकार

उदय प्रकाश समकालीन कहानी के बहुत चर्चित एवं अत्यंत महत्त्वपूर्ण रचनाकार हैं। वे न केवल एक कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं, बल्कि एक सशक्त कथाकार के रूप में भी भारतीय साहित्य उन्हें जानता है। वे बहुमुखी, बहुआयामी, विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं। वे समकालीन हिंदी कहानी की अविरल प्रवहमान स्रोतस्विनी को नई दिशा देने वाले कहानीकारों में से एक हैं। उन्होंने अपनी सशक्त लेखनी से हिंदी कहानी की मंद गति धारा को अपने अनुरूप गति प्रदान करने की कोशिश की हैं और इस कार्य में वे सफल भी हुए हैं।

### 1. व्यक्ति उदय प्रकाश :

### 1.1. जन्म एवं परिचय :

उदय प्रकाश का जन्म 1 जनवरी, सन् 1952 को मध्यप्रदेश के शहडोल ज़िले (आज के समय में अनूपपुर जिला) के एक छोटे से गाँव सीतापुर में हुआ था। उनका घर गाँव के अन्य घरों की तरह ही अति साधारण था। वे स्वयं कहते हैं,"हमारा घर गाँव में है। पहले मिट्टी का घर था। छप्पर खपड़ैल की होती थी। अभी भी खपड़ैल की होती है। गाँव से लगा हुआ जंगल था। जंगल में लंगूर बहुत होते थे। बल्कि लंगूर शब्द तो मैंने काफी बाद में सीखा, किताबों से। हम उन्हें काले मुँह का बंदर कहते थे।"[1] आगे वे अपने घर की खस्ता हालत को दर्शाते हुए लिखते हैं,**"लंगूर और कौए, दोनों हमारे घर की छप्पर के दुश्मन थे। लंगूर घर की छप्पर पर दौड़ते तो खप़डे फूट जाते। कौए भी जगह–जगह से खपड़ैलों को हटा**

**देते थे।"**[1]इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि गाँव के किन हालातों में एवं प्रकृति के कितने ही करीब आम लोगों के साथ उदय प्रकाश जी का बचपन गुजरा होगा। इस संदर्भ में एक और बात दर्शनीय है कि उनका गाँव-घर एवं जंगल के साथ–साथ नदी के तट पर भी था। इस बारे में वे स्वयं ही कहते हैं,**"हमारा घर नदी के बिल्कुल तट पर है। तट के इतना पास कि दीवार और मुँडेर का प्रतिबिंब नदी की धारा में डूबता-उतरता है और बरसात के दिनों में अज्ञात जंगलों से बहकर आने वाले साँप अक्सर हमारे घर में घुस आते हैं।"**[2] इन उदाहरणों से पता चलता है कि उदय प्रकाश का बचपन किन हालातों में एवं कितने ही ख़तरों के बीच गुजरा होगा।

## 1.2. पारिवारिक पृष्ठभूमि :

**माता-पिता :** कथाकार उदय प्रकाश के पिता का नाम प्रेम कुमार सिंह एवं माता जी का नाम श्रीमती गंगा देवी था। दोनों की मृत्यु कैंसर जैसी लाइलाज बीमारी से हुई थी और आपके पितामह की मृत्यु भी कैंसर से ही हुई थी। इसीलिए आप कैंसर और मृत्यु को बचपन से ही देखते आये हैं -**"बचपन से ही मृत्यु को मैंने लगातार अपनी आंखों से देखा था। बारह या तेरह वर्ष का था जब माँ की मृत्यु हुई। उस वक्त उनकी (माँ की) उम्र सैंतीस वर्ष की थी। उन्हें श्वासनली का कैंसर था।"**[3]

उनकी माता की मृत्यु 30 जनवरी, सन् 1964 में कैंसर से हुई थी। किसी भी बच्चे के लिए अपनी माँ की मृत्यु को सह पाना कितना कठिन होता है, इसी भाव को अपनी माँ की मृत्यु के संदर्भ में उदय प्रकाश अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं-"**जब माँ की मृत्यु हुई, मैं उस शून्य को सह पाने की स्थिति में नहीं था।**

**दुबला–पतला था, चिड़चिड़ा था और संभवत: बहुत अधिक संवेदनशील था।"**[4] वे अपने बचपन के बहुत ही मुश्किल दिनों की याद ताज़ा करते हैं, जिसमें बच्चे का भविष्य या तो बनता है या फिर बिगड़ता है,**"मेरे पिता तथा माता का निधन तभी हो गया था, जब मैं बहुत छोटा था। स्वयं को बनाने के लिए मुझे बहुत पापड़ बेलने पड़े। लेकिन यह ठीक उसी तरह है जैसा कि इस दुनिया के लाखों लोगों के साथ होता है। इसकी वजह से मैंने अपना रास्ता स्वयं खोजा, वर्ना दूसरों की मर्जी से मेरा जीवन बनता–बिगड़ता।"**[5] इस लाइलाज बीमारी के चलते उनको अपनी बहुत सारी जमीन तथा उनके घर के बहुत सारे जेवर भी बेचने पड़े थे। बम्बई के टाटा मेमोरियल अस्पताल से वापिस अपने घर लाने पर, उनकी माता जी की देखभाल घर पर ही होती रही। इस संदर्भ में उदय प्रकाश जी कहते हैं, "**माँ दक्षिण की ओर के कमरे में रहती थीं। बम्बई के टाटा मेमोरियल अस्पताल से उन्हें ले आया गया था। सिर्फ अनार का रस पीती थीं। वे बोलने के लिए अपने गले में डॉक्टरों द्वारा बनाए गए छेद में उँगली रख लेती थीं। वहाँ एक ट्यूब लगी थी। उसी ट्यूब से वे साँस लेती थीं।"**[6] इस तरह उनकी माता जी की कैंसर की बीमारी और उसका इलाज लगभग एक वर्ष तक चलता रहा और वह धीरे-धीरे ओर कमजोर होती चली गईं। इस संदर्भ में वे कहते हैं-**"माँ की उँगलियाँ बहुत ही पतली हो गयी थीं। उनमें रक्त नहीं था। पीली-त्वचा। पतंगी कागज जैसी। पीली भी नहीं, जर्द और बेहद ठंडी। ऐसा ठंडापन दूसरी बेजान चीजों में होता है। कुर्सियों, किवाड़ों या साइकिल के हैंडिल जैसा ठंडापन।"**[7] उदय प्रकाश अपनी माँ के अन्तिम क्षण का विवरण कुछ इस प्रकार देते हैं, "**सुबह पाँच बजे आँगन में गाँव की औरतें**

**रो रही थीं। यह रोना नहीं था, विलाप था। पता चला माँ रात में नींद में ही खत्म हो गयीं।"**[8]

उदय प्रकाश अपने पिता की मृत्यु के बारे में कहते हैं, **"सत्रह वर्ष का था जब पिता की मृत्यु हुई। उन्हें दाढ़ और गाल का कैंसर था।"**[9] इसीलिए उनके दायाँ गाल और दायी दाढ़ थी ही नहीं। इस प्रकार यह एक विचित्र संयोग कहे या नियति के हाथों लिखी गयी उनकी वंशावली की कुण्डली कि पिछली कई पीढ़ियों से उनकें परिवार के किसी सदस्य ने छियालीस वर्ष की आयु- रेखा को पार ही नहीं किया; इस संदर्भ में वे स्वयं कहते हैं-**"पिछली कई पीढ़ियों से हमारे परिवार ने छियालीस वर्ष की आयु-रेखा को पार नहीं किया। मेरे पितामह की मृत्यु भी पैंतालीस की उम्र में हो गयी थीं। और यह भी एक तथ्य है (या शायद संयोग) कि सभी की मृत्यु कैंसर से हुई।"**[10] उदय प्रकाश की चार कहानियों-'नेल कटर','डिबिया','अपराध' और 'दरियाई घोड़ा' की आधार भूमि उनका परिवार ही है। इनमें से 'दरियाई घोड़ा' नामक कहानी की पृष्ठभूमि में पिता की मृत्यु है। उदय प्रकाश का कहना है कि उनके पिता की मृत्यु के बारे में यदि कोई कहानी है तो वह है 'दरियाई घोड़ा'। उनके पिता को भी बम्बई के टाटा मेमोरियल अस्पताल में ही भर्ती कराया गया था और वहाँ पर डॉक्टरों ने उनके गाल और दाढ़ के कैंसर प्रभावित अंश का ऑपरेशन किया था, जिससे उनके चेहरे का अनुपात ही बिगड़ गया था। इस संदर्भ में उदय प्रकाश अपनी कहानी 'दरियाई घोड़ा' में लिखते हैं- **"उनके दायें गाल के नीचे से लेकर कान के पीछे गले तक का मांस ऑपरेशन से निकाल दिया गया था। एक विकराल खुला हुआ घाव वहाँ था। उनकी दायी दाढ़ भी निकाल दी गयी थी और इसीलिए उनके चेहरे का अनुपात बिगड़ गया था।**

**देखने से लगता था जैसे बहुत जल्दबाजी में उनके चेहरे को आधा कर डाला गया हो। होंठ टेढ़े हो कर लटक गये थे। नाक एक ओर झुकी लग रही थी और दायी आँख बंद होने के बावजूद बंद रहने के लिए जद्दोजहद करती दिखाई पड़ती थी।"**[11] अन्यत्र वे कहते हैं,**"अब वहाँ एक बिना शकल का लौंदा था। मांस का लोथड़ा। कैंसर था जिसका आँपरेशन हुआ था। कार्सीनोमा आन चीक, यानी गाल के भीतर-भीतर दाढ़ों से होता हुआ गले में स्वर यंत्र तक फैला हुआ राज रोग, दुनिया के तमाम वैज्ञानिकों के पास जिसकी कोई दवा नहीं।"**[12] आहार के रूप में उन्हें सिर्फ तरल आहार ही 'फीडिंग ट्यूब' के जरिए दिया जाता था, जैसा कि उदय प्रकाश अपने पिता पर आधारित कहानी 'दरियाई घोड़ा' में आगे लिखते हैं,**"दूध में प्रोटीनेक्स, ग्लूकोज मिलाकर उसे सीरिंज में भर लिया जाता फिर फीडिंग ट्यूब के जरिए उसे दादा के पेट में पहुँचा दिया जाता। यही उनका आहार था।"**[13]

उदय प्रकाश के व्यक्तित्व की खासियत यह है कि सच्चाई को बेपर्दा करने में कहीं कोई हिचकिचाहट उनमें नहीं है। भले ही अपने परिवार के किसी सदस्य की बुरी आदत ही क्यों न हो, उनकी कलम ईमानदारी से अपनी बात कह ही देती है। उनके पिता को नशे की लत थी। यह लत सिर्फ तंबाकू तक ही सीमित नहीं थी बल्कि उन्हें बियर, ह्विस्की आदि पीने की भी आदत पड़ी हुई थी। इसी कारण मुम्बई के टाटा मेमोरियल अस्पताल में रहते हुए भी नशे की मांग करने में उन्हें किसी तरह की लज्जा नहीं हुई। वे एक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहते हैं,**"यह पहली बार था कि मुझे खुद उन्हें शराब पिलानी पड़ रही थी और उन्होंने भी इतनी बेशर्मी से मुझसे यह काम करने के लिए कहा था। अच्छा होता यह काम कक्का कर देते। या निलम्मा कर देती या डॉक्टर मदान। मैंने कहीं पढ़ा था कि नशे की लत आदमी के**

**व्यक्तित्व को इतना पतित कर देती है कि वह किसी भी हद तक उतर सकता है। दादा के साथ भी लगता है यही हुआ था। उनकी आत्मा मर चुकी थी।"**[14] वास्तव में नशे की लत मनुष्य को कितना लाचार बना देती है, इसका उदाहरण हम उदय प्रकाश की कहानी 'दरियाई घोड़ा' में देख सकते हैं। शायद उनके पिता की आत्मा भी मर चुकी थी। वे कहते हैं,**"डॉक्टर साहब ने जो मात्रा बताई थी, उतनी देने के बाद मैं बंद करना चाहता था कि दादा भिखमँगे बन गये। बीमार आदमी की आँखों में प्रार्थना। एक लिजलिजी गिड़गिड़ाहट। थोड़ा-ए मुन्ना, बस थोड़ा-सा और, ऐ बेट्टी जरा-सा, बस इत्ता। वे हाथ उठाकर उंगलियों से भीख की मात्रा बता रहे थे। मैंने लगभग पूरा ही क्वार्टर उनके भीतर उँड़ेल दिया और भाग खड़ा हुआ।"**[15] उनके पिता की सेहत ओर बिगड़ती चली गई और डॉक्टरों की कोशिशें नकाम हो गईं। अंतत: डॉक्टर भी कहने लगे,**"डॉक्टर के बस में बहुत कम चीज़ें होती हैं। मरीज ही ठीक होता है। कोऑपरेट करना छोड़ दे, रिस्पांस न दे तो मुश्किल हो जाता है। इसे जायंडिस हो गया है। बहुत डेलिकेट सिचुएशन है। सैप्टिक अलग। कोबाल्ट थेरपी भी नहीं हो पा रही है। क्या करें?"**[16] इस तरह उनकी माँ की मृत्यु के पाँच वर्ष बाद उनके पिता की मृत्यु भी इसी लाइलाज बीमारी को झेलते हुए 9 सितम्बर, सन् 1969 को हुई। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि जीवन में आए इन झंझावातों ने उदय प्रकाश के कथाकार को गढ़ने में अपनी महती भूमिका का निर्वाह किया। उनके जीवन में संघर्षों का दौर बहुत छोटी-सी उम्र में ही शुरू हो गया। संघर्ष से उनके व्यक्तित्व को आकार मिला, जिसने उनके कथाकार जीवन को कहीं बेहतरीन तरीके से देखने-समझने की शक्ति दी। इससे उनके अनुभव क्षेत्र का कहीं अधिक विस्तार हुआ।

**पत्नी:** कथाकार उदय प्रकाश की पत्नी कुमकुम जी बेहद सहज, सरल,संयत और बहुत ही भावुक स्वभाव की हैं। वे फ्रैंच और स्पेनिश में पोस्ट ग्रैजुएट हैं, इसके अलावा वे और दो विदेशी भाषाएँ पुर्तगीज और इंडोनेशियन भी जानती हैं। विवाह के बाद परिवार में आर्थिक दिक़्क़तों के चलते कुमकुम जी ने लगभग 35 वर्षों तक नौकरी की और घर व दोनों बच्चों को भी संभालती रही। कुमकुम जी सुधा उपाध्याय के साथ बातचीत के दौरान अपने बच्चों के बारे में कहती हैं **"हमारे दो बेटे हैं शांतनु व सिद्धार्थ। बड़े बेटे सिद्धार्थ आजकल जर्मनी में सेटिल हैं और वहाँ पर्यावरण से संबन्धित कंसल्टेंट हैं। मेरी बड़ी बहू फ्रैंच हैं। वह वायलिन वादिका है। इन दोनों के दो बच्चे हैं- मारियुस व अनुक। परिवार में बेटी न होने की कमी हमें महसूस होती रही, पर अब पोती अनुक के आ जाने पर हम सब बेहद खुश हैं ...अब पोती के आ जाने पर परिवार भरा-पूरा हुआ है। यानी मैं और उदय अब बाबा-दादी बन चुके हैं। छोटे बेटे शांतनु का भी विवाह हो चुका है। छोटी बहू आशिमा व शांतनु हम दोनों के साथ हैं।"**[17] इससे अब यह कहा जा सकता है कि पारिवारिक दृष्टि से उदय प्रकाश का घर एक भरे-पूरे परिवार का आशियाना बन चुका हैं।

## 1.3. साहित्य-सृजन के प्रति रुचि :

उदय प्रकाश अपने साहित्य सृजन के प्रेरणा-स्रोत के रूप में मृत्यु और कैंसर को देखते हैं। बचपन से ही उन्होंने मृत्यु को बहुत ही नजदीक से देखा एवं अपने परिवार को कैंसर और मृत्यु से लड़ते-जूझते पाया। एक दिन जब वह तैरना सीख रहे थे, संयोग से नदी आगे जाकर गहरी हो गई, जिसकी उन्हें जानकारी नहीं थी। नतीजन वे अतल पानी में डूबने लगे। मृत्यु समीप थी। ऐन उसी वक्त किसी नारी ने उनकी प्राण-रक्षा की। इस प्रसंग में वे स्वयं कहते हैं,**"तो**

**उस दिन यही होता। सोन नदी के जल में मेरी वह अंतिम छटपटाहट अमर हो जाती मृत्यु के बाद। लेकिन नदी के घाट पर कपड़े धो रही धनपुरिहाइन नाम की स्त्री ने इसे जान लिया। नदी की धार में तैरकर, खोज कर, उसने मुझे निकाला और जब मैं उसके परिश्रम के बाद दुबारा जिंदा हुआ तो उसे इतना आश्चर्य हुआ कि वह रोने लगी।"**[18] वे आगे फिर कहते हैं **"लेकिन उस एक घटना के बाद से मृत्यु हमेशा मेरे आस-पास रही है। मेरे बिलकुल करीब सांसें लेती हुई। यह कहना मेरे लिए मुश्किल है कि मेरे भीतर, मेरी चेतना में जीवन कितना है और मृत्यु की उपस्थिति कितनी है। संभवत: जैसा कुछ दार्शनिक कहते हैं कि मृत्यु को स्थगित रखना, टालना या उससे संघर्ष करना ही जीवन है। फेफड़े की हर हरकत, हृदय का हर स्पंदन, हर सांस का आना-जाना, देह या मस्तिष्क की चेष्टाएँ–सब कुछ मृत्यु के विरुद्ध संघर्ष के लक्षण हैं और यही तो जीवन है।"**[19] इसीलिए वे चाहते हुए भी मृत्यु को हास्यास्पद नहीं बना पाते। उन्हें यह अनुभव होता हैं कि मृत्यु को 'ह्यूमेराइज' नहीं किया जा सकता। उनके लिए मृत्यु सदैव चेतना, विचार और इंद्रियों को अभिभूत कर डालने वाली एक गंभीर किस्म की अनिवार्य सत्ता है। प्रत्येक सर्जनात्मकता, कला, संगीत, नृत्य, विज्ञान आदि एक स्तर पर इसी अंतिम परिणति के विरुद्ध मनुष्य की जीवंत चेष्टाएँ हैं। यानी मनुष्य की सृजनात्मकता एक अर्थ में मृत्यु का ही प्रतिकार है। मृत्यु के पार जाने, मृत्यु को लांघने की गहरी मानवीय चेष्टाएँ आदिकाल के ऋषि-मुनियों से लेकर अधुनातन सर्जकों तक में देखी जा सकती हैं। प्रख्यात मार्क्सवादी कला-चिंतक अर्न्स्ट फिशर ने सम्भवत: इसीलिए कहा था कि **"सृजनात्मकता और कुछ नहीं, अपने कलाबद्ध और क्षणभंगुर अनुभव को शाश्वत (इम्मोर्टल) बनाने की एक गहन मानवीय चेष्टा है।"**[20] इसी प्रकार का

एक और दृष्टांत कवि शमशेर बहादुर सिंह के संदर्भ में प्रस्तुत करते हुए आलोच्य रचनाकार कहते हैं- **"इसका एक बिलकुल ताज़ा उदाहरण है–कवि शमशेर बहादुर सिंह का देहांत। वह काया, जो नश्वर थी (एक सच मुहावरा), वह मिट गई। लेकिन उनकी इन पंक्तियों को देखिए : 'मुझको प्यास के पहाड़ों पर लिटा दो / जहाँ मैं, एक झरने की तरह तड़प रहा हूँ। / मुझको सूरज की किरणों में जलने दो/ ताकि उसकी आँच और लपट में तुम / फ़व्वारे की तरह नाचो/ मुझको जंगली फूलों की तरह ओस से / टपकने दो/ ताकि उसकी दबी हुई खुशबू से अपने / पलकों की उनींदी जलन को तुम भिगो सको /मुमकिन है तो।"**[21] कथाकार उदय प्रकाश जी कहते हैं कि अब उन्हें मृत्यु से डर नहीं लगता क्योंकि उन्होंने बचपन में ही अपने माता-पिता को कैंसर से मरते देखा है। इसीलिए वे अपने परिवार के साथ कैंसर का सम्बन्ध नियति के हाथों जोड़े गए विचित्र रिश्ते के रूप में देखते हैं। मृत्यु से इसलिए भय नहीं होता कि उसके साथ ही यह जीवन समाप्त हो जाता है, बल्कि मिलान कुंदेरा के शब्दों में कहा जाए तो-**"मृत्यु से इसलिए व्यक्ति डरता है क्योंकि उसके साथ ही उसके कुछ ऐसे नितांत निजी और एकांतिक अनुभवों और घटनाओं का अस्तित्व खत्म हो जाता है, जो सिर्फ उसी व्यक्ति की स्मृति में मौजूद हैं और जिनका साक्षी उसके अलावा कोई अन्य नहीं।"**[22] उदय प्रकाश संभवत: इसी बात को आगे बढ़ाते हुए लिखते हैं,**"कोई भी रचनाकार इसीलिए ऐसे एकांतिक अनुभवों को व्यक्त करके दूसरे को भी उनका साक्षी बनाना चाहता है। यानी अपनी भौतिक मृत्यु के बाद भी वह अन्यों की स्मृति में उन अनुभवों को जीवित रखने का प्रयत्न करता है। यह सच है कि किसी भी व्यक्ति की अंतिम मृत्यु तब होती है, जब दूसरों की स्मृति से भी वह विलुप्त होता है।"** [23]

कैंसर या मृत्यु से जितने की चेष्टा हर आत्मचेतस व्यक्ति अपने तरीके से करता है। उदय प्रकाश इसकी पुष्टि करते हुए कहते हैं-"**बुद्ध ने इसे अपने तरीके से किया, वैज्ञानिक अपने तरह से करते हैं और हमारा तरीका अपना है। इस चेष्टा में सफलता भी मिलती है-अश्वत्थामा या मार्कण्डेय की तरह अमर होकर नहीं, बल्कि सत्यजित रे की तरह 'पथेर पांचाली' बनाकर, तालस्तॉय की तरह 'युद्ध और शांति' लिख कर, पिकासो की 'गुएनिका', लोर्का की 'पाँच बजे दोपहर', टैगोर की 'गीतांजलि', हुसैन की 'मकड़ी और दीमक', कुमार गंधर्व की 'झीनी-झीनी बीनी', बुनुएल की 'नाजरीना', शमशेर की 'अमन का राग' या 'टूटी हुई बिखरी हुई' या निराला की तरह 'राम की शक्ति पूजा' लिखकर!"**[24] उदय प्रकाश को यह स्वीकार करने में कोई संकोच भी नहीं है कि 'कैंसर और मृत्यु' ही उनकें लेखन का मूल स्रोत है। इस संदर्भ में वे कहते हैं, **"यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं कि कैंसर और मृत्यु के आसन्न आगमन को अतिक्रमित करने या उससे टकराने की इच्छा ही मेरी कविताओं और कहानियों का मूल उद्गम स्रोत है।"**[25] इस प्रकार वे शमशेर की तरह ही घोषणा करते हैं कि 'काल तुझसे होड़ है मेरी'। वे इसी क्रम में आगे लिखते हैं **"यह बात अलग है कि मेरे जैसे नगण्य, सामान्य और औसत लेखक के हिस्से में असफलता के ही आने की संभावना अधिक है, लेकिन मेरी तमाम कविताओं और गद्य लेखन में त्रिलोचन की 'धरती का गद्य' किसी एक वाक्य में भी व्यक्त हो सका, कविताओं की किसी एक पंक्ति के रदीफ-काफिये, शमशेर की 'टूटी हुई बिखरी हुई' की किसी एक पंक्ति के पासंग भी हो सके, तो वह निमिष मेरी सफलता, मेरी अनश्वरता और रचना के माध्यम से मेरी कालजीत शाश्वतता का क्षण होगा।"**[26]

इसके अलावा अपने लिखने की प्रेरणा के रूप में उन्होंने अपनी माताजी एवं अपने घर के पढ़ने-लिखने के संस्कार को भी देखा है-**"लिखने का सिलसिला ऐसे शुरू हुआ... जैसा कि मैं पहले भी बता चुका हूँ, मेरी माँ भोजपुरी क्षेत्र की थीं। मिर्जापुर के पास विजयपुर नाम की जगह है। उस समय कम उम्र में शादी हो जाती थी। जब वे आईं तो अपने साथ एक कॉपी लाई थी। उसमें मिर्जापुर और उस इलाक़े के गाने लिखें हुए थे। माँ की हैंडराइटिंग बहुत सुंदर थी। वे छोटे-छोटे चित्र बनाती थीं। क्रोशिया, कढ़ाई-बुनाई का काम बड़ी कलात्मकता से करती थीं। वे गाती बहुत अच्छा थीं। वे अक्सर गाँव की स्त्रियों से घिरी रहती थीं। माँ के आने के बाद गाँव की स्त्रियों में बड़ा बदलाव आया। मैंने माँ की उसी कॉपी को देखकर ही कविता लिखना शुरू किया और चित्र बनाना भी उस कॉपी से ही सीखा। बहुत छोटी उम्र में मैं चित्र बनाने लगा था और कविता भी जब शुरू की तो छह-सात साल का रहा होऊंगा। मेरी बहनों को मेरी तब की कविताएँ याद हैं। पढ़ने-लिखने का संस्कार था घर में, पिताजी लगभग सारी पत्रिकाएँ माँगते थे।"**[27] इस प्रकार माँ की प्रेरणा, घर के संस्कार और कैंसर-मृत्यु जैसी घटनाओं ने उदय प्रकाश को लिखने की प्रेरणा दी और इस तरह लेखन का जो सिलसिला तब शुरू हुआ, वह आज तक जारी है।

## 1.1.4. पुरस्कार और सम्मान:

कथाकार उदय प्रकाश को उनके असीमित साहित्यिक योगदान के लिए विभिन्न संस्थानों और सरकार द्वारा विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया हैं । उन्हें अब तक दिये गए पुरस्कारों का विवरण निम्नवत हैं-

(1)वर्ष के श्रेष्ठ लेखक – 1989, (यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, नई दिल्ली),

(2)भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार -1980 ई॰ में 'तिब्बत' नामक कविता पर,

(3)ओमप्रकाश सम्मान –1984 ई॰ में 'दरियाई घोड़ा' कहानी संग्रह पर (1980-1982 के प्रकाशनों में श्रेष्ठ कृति),

(4)श्रीकांत वर्मा स्मृति सम्मान – 1990 ई॰ में 'तिरिछ' कहानी संग्रह पर,

(5)मुक्तिबोध सम्मान – 1996 ई॰ में मध्य प्रदेश साहित्य परिषद द्वारा कहानी संग्रह 'और अंत में प्रार्थना' पर,

(6)सद्भावना सम्मान – 1998 में पत्रकारिता के क्षेत्र में दिये गए उदय प्रकाश के योगदान के लिए 'हारमोनी और फर्टनेटी आर्गेनाइजेशन', नई दिल्ली द्वारा प्रदान किया गया,

(7)साहित्यकार सम्मान – 1999 हिंदी अकादमी द्वारा,

(8)साहित्य पर वरिष्ठ शिक्षावृत्ति, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, 1999,

(9)पहल सम्मान- 2003 साहित्य में योगदान के लिए,

(10)पेन ग्रान्ट (स.रा.अ.)- पीली छतरी वाली लड़की के अनुवाद –'ए गर्ल विद गोल्डेन पारासोल' पर – 2005,

(11)पुश्किन अवार्ड -2007,

(12)द्विजदेव सम्मान – 2008 विमला फाउंडेशन न्यास द्वारा,

(13)वनमाली सम्मान-2008 ई॰ में वनमाली स्मृति कथा पुरस्कार समिति भोपाल से

(14)सार्क लिटरेटी अवार्ड – 2009,

(15)भारतीय भाषा परिषद सम्मान – 2011,

(16)साहित्य अकादमी सम्मान – 2011

## 1.2. उदय प्रकाश का कृतित्व :

उदय प्रकाश का व्यक्तित्व बहुआयामी है, वे बहुमुखी विलक्षण प्रतिभा के धनी-मानी हैं। वे एक संवेदनशील कवि, प्रयोगशील कथाकार, कलाओं के गहरे जानकार और गहन समाज शास्त्रीय चिंतन करने वाले एक जुझारू एवं निडर लेखक हैं। वे (उदय प्रकाश) हिंदी ही नहीं अपितु भारतीय लेखकों की उस पंक्ति में खड़े हैं, जिनकी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा हैं। इस संदर्भ में पाकिस्तान की प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका **'आज'** के सम्पादक अज़मल कमाल ने लिखा हैं,**"पाकिस्तान में वैसे तो सब कुछ है, मगर यहाँ कोई 'उदय प्रकाश' नहीं है। वैसे उर्दू में शायद उदय प्रकाश से ज्यादा चर्चित कोई दूसरा हिंदी का कहानीकार बल्कि कवि तक नहीं है। मेरे विचार में केवल उर्दू ही नहीं, संसार की हर भाषा उदय प्रकाश की कहानियों को 'अपना' समझने में गर्व महसूस करेगी। यह कारनामा कोई साधारण घटना नहीं है और यह इसीलिए सम्भव हो सका है कि भाषा की वह सरहदें जहाँ खतरे के लाल बल्ब जलते हैं, उन्हें उदय प्रकाश ने निडर**

**और बेखौफ होकर पार किया है। भाषा को प्रेम भरे रहस्य के साथ उदय प्रकाश ने इसी तरह टेम (Tame) किया है, जिस प्रकार मनुष्य ने ब्रह्म या खुदा को टेम (Tame) करके अपने घर, चौबारे और रसोई में लाकर बैठा दिया है या उसे प्रेम और स्नेह के साथ 'अल्लाह-मियां' बना दिया है।"**[28] उदय प्रकाश अपनी रचनाओं को श्रेष्ठता प्रदान करते हैं और उनके होने का प्रमाण भी देते हैं। उनकी रचनाओं का विषय चयन अद्‌भुत होता है। इस संदर्भ में उनका मानना हैं कि लेखक विषय नहीं चुनता बल्कि विषय ही लेखक को चुनने के लिए दबाव देता है। इस बारे में उनका मत है **"कई बार ऐसे दबाव आते हैं कि मैं लिखने के लिए विवश हो जाता हूँ और तब मैं परिणामों के बारे में नहीं सोचता और यह भी नहीं सोचता कि उसके पाठक होंगे या नहीं। मैं लिखता हूँ तो यह सोचकर कि शायद पाठक यहाँ न हों । मेरा तो मानना है कि लिख देना चाहिए जैसा कि मिलान कुंदेरा कहते हैं-'राइटिंग इज एन एक्ट अगेंस्ट फार्गेटिंग'। .....बहुत सारी चीज़ें जो भूली जा रही हैं, लुप्त हो रही हैं, विस्मृत हो रही हैं और लोप करने की कार्यवाई की जा रही है, विस्मृत करवाई जा रही है, किन्हीं ताक़तों के द्वारा। आप सब जानते हैं कि लिखना उनके विरुद्ध एक तरह की गहरी मानवीय प्रतिकार की चेष्टा है।"**[29] इस संदर्भ में उदय प्रकाश के कृतित्व को निम्न बिन्दुओं पर सामने रखकर समझा जा सकता है-

## 1.2.1 कवि उदय प्रकाश:

उदय प्रकाश के लेखकीय जीवन की शुरुआत एक कवि के रूप में हुई हैं। आप भी स्वयं को मूलत कवि के रूप में स्वीकार करते हैं। रेखा सेठी से बातचीत में आपने उक्त तथ्य स्वीकार करते हुए कहा हैं, **"मैं मूलत: कवि हूँ। क्योंकि इस बात को एक कवि से ज्यादा कोई नहीं जानता अपने बारे में। मैंने**

**बचपन से सिर्फ पैंटिंग की है और कविता लिखी है। इस बात को हर कोई जानता है। मेरी बहनें भी जानती हैं। हाँ, यह जरूर है कि मेरा संग्रह चौदह साल बाद आया लेकिन मैंने कभी कविता लिखना बंद नहीं किया। ये कविताएँ पत्रपत्रिकाओं - में छपती भी रहीं। उन पर चर्चा भी होती रही।"**[30] इस प्रकार से उदय प्रकाश एक कथाकार होते हुए भी मूलत पहले स्वयं :को कवि और उसके बाद कथाकार एवं कहानियों को भी आप अपनी कविता का ही एक्सटेंशन मानते हैं-**मेरी कहानियाँ " भी कविता का ही एक्सटेंशन हैं।'छतरियाँ' कहानी या 'डिबिया' ऐसी बहुत-सी या 'दोपहर' ऐसी ही कहानियाँ हैं, जो कविताएँ ही हैं।"**[31]

इस प्रकार उनके द्वारा कविता के साथ-साथ कहानी विधा में प्रवेश चमत्कारिक माना गया, जिन्होंने कहानी के बोध और कथा–विन्यास को बदलते हुए उसे विलक्षण प्रभावों से सम्पन्न कर दिया। कविता के क्षेत्र में भी उदय प्रकाश का आगमन चौंकाने वाला सिद्ध हुआ जब उन्होंने प्रयोग और व्यंजक युक्तियों के माध्यम से अपने समय के सबसे क्रूरतम सत्य का अन्वेषण कर उसे बेपर्दा किया और उससे एक गम्भीर बहस की सम्भावना पैदा की।

अस्सी के दशक में लिखा गया एवं प्रकाशित उदय प्रकाश का पहला काव्य-संग्रह है **'सुनो कारीगर'**। इस संग्रह में एक खण्ड है-'जेठ की धूप में आँच तो रहेगी ही'। इस खण्ड में लगातार चार ऐसी कविताएँ हैं,'सरकार', 'मालिक आप नाहक नाराज हैं', 'गैम सैंक्युअरी' और 'बहेलिए' जिन्हें पढ़कर अस्सी के दशक में लिखी गई कविताओं का मिजाज एवं तत्कालीन व्यवस्था तंत्र को समझा जा सकता है।

उदय प्रकाश का दूसरा काव्य-संग्रह है **'अबूतर-कबूतर'** जो सन् 1984 में प्रकाशित हुआ था, जिसमें उनकी काव्य संवेदना के फैलाव को सहज रूप से लक्षित

किया जा सकता है। यह काव्य संग्रह उदय प्रकाश की ओर से कवि केदारनाथ सिंह को समर्पित हैं। इस संकलन के कविता-क्रम को देखें तो इसे 'पसली का दर्द', 'अबूतर-कबूतर' और 'करीमन और अशर्फी' नामक तीन खण्डों में विभाजित हैं। लेकिन इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण बात है अभिव्यक्ति की नयी और अनूठी शैली। नयापन कहने की भंगिमा मात्र नहीं है, बल्कि ये कविताएँ धरती पर नए मनुष्य के आगमन की सूचना देती हैं। नये मनुष्य से तात्पर्य है नये विचार और नये संवेदना के नये धरातल वाला मनुष्य।

उदय प्रकाश का दूसरे काव्य संग्रह 'अबूतर-कबूतर' में आदमी की असहायता, अकेलापन, प्यार, अभाव और थकान के चित्र उपस्थित करने वाली कई कविताएँ हैं, लेकिन विसंगतियों से तोड़ने के संकेत भी उनमें अंतर्निहित हैं। कई बार तो कई सवाल ही बेहतर विकल्प की ओर इशारा करते हैं।

'संवेद' पत्रिका के सत्रहवें अंक में प्रकाशित एक बातचीत में उदय प्रकाश ने साफ-साफ शब्दों में बता दिया हैं कि कविता का सम्बन्ध वर्तमान से है और इसलिए उसका वर्तमान राजनीति से संबन्ध-विच्छेद सम्भव नहीं है क्योंकि वर्तमान दौर में  सामाजिक सरोकार का कोई भी पहलू ऐसा नहीं है, जिस पर राजनीति का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव नहीं पड़ा हो। शायद इसलिए ही उनकी कविताओं में बड़ी संख्या में ऐसी अनेक कविताएँ हैं, जिनमें राजनीति, सत्ता, सत्ता की राजनीति या साम्राज्यवादी गतिविधियों से सम्बंधित वैचारिक टिप्पणियाँ हैं। वर्तमान में सत्ता या राजनीति के साथ-साथ यहाँ शिक्षा, संस्कृति या सभ्यता, जातिवाद या क्षेत्रवाद पर भी आज राजनीति हॉवी है, यहाँ तक कि आध्यात्मिक क्षेत्र में भी राजनीति है। जहाँ राजनीति अधिक मजबूत है, वहाँ सत्ता की

विड़म्बनाएँ भी ज्यादा देखी जा सकती हैं। इसीलिए कवि ने अपनी कविता में अपने को 'प्रजातंत्र का प्रजापति' मानने वाली सत्ता का घातक स्वरूप तब साफ-साफ उद्घाटित किया है; वह 'प्रजा' और 'तंत्र' के पृथक अस्तित्व को समझाते हुए इस प्रकार घोषणा करता है -**"राज्यसत्ता/ 'प्रजातंत्र' का प्रजापति है / और 'प्रजा' अगर 'तंत्र' से /टकराती है कभी / तो तंत्र की हिफाजत में तैनात / बंदूक की नाल से /बोलती है रज्यसत्ता-/ कि सुनो मेरी प्यारी-प्यारी प्रजा /तुम्हें तंत्र के भीतर ही / प्रजा होने का हक है /पुलिस और फौज सचिवालय और न्यायालय / कर्फ्यू और गोली /प्रजा और तंत्र के संबंधों की / संवैधानिक व्याख्याएँ हैं।"**[32]

असली राजनीति का संबंध जनतंत्र या प्रजातंत्र से है। शासनतंत्र भले ही आज की राजनीति की सत्ता केंद्रित दृष्टि का परिणाम हो, पर उदय प्रकाश जैसे जागरूक और सचेतन कवि खुल्लम-खुल्ला उस पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी भी लिख देते हैं।

हम जिस समय में जी रहे हैं, उसमें कवि-प्रतिभा से संपन्न मौकापरस्त लोग और सत्ता सापेक्ष निश्चिंत आलोचकों का जमावड़ा है, इसमें दलालों की भरमार में कोई कमी नहीं हैं। वैसे दलाल एकाएक हमारे ही समय में नहीं पैदा हुए हैं। प्रत्येक काल में सत्ता दलालों से आच्छादित रही है। दलाल अपने को मालिक से कम कभी नहीं आंकते, हालांकि हर युग में जीतते-जीतते एक-न-एक दिन वे जनता की आदालत में आ ही जाते हैं और तब जनता उनसे वैसे ही व्यवहार करती है, जैसे 'एक था अबूतर, एक था कबूतर' शीर्षक कविता में कवि ने अभिव्यक्त किया हैं- **"अबूतर और कबूतर / दोनों सिक्के के दो पहलू / भेड़िये की मूँछ के दो बाल /**

**अपने मालिक के पक्के दलाल ।...अबूतर ने खास पढ़ा नहीं था / लेकिन पढ़े हुओं को काटता था। कबूतर ने खास लिखा नहीं था / लेकिन लिखे हुओं को डाँटता था।"[33]**

उदय प्रकाश की कविताओं के संदर्भ में विजय कुमार ने ठीक ही कहा हैं कि- **"कविताओं में उदय प्रकाश की एक और कलात्मक विशेषता गौरतलब है। वे एक ओर वर्तमान के अलग-अलग संदर्भों और स्थितियों को लेते हैं, पृथक और विच्छिन्न दुनियाँ को साथ-साथ रख देते हैं, ये पिघलकर एक इकाई बन जाती हैं। इनके 'फ्यूजन'से एक समग्र समय बनता है। हम इन पृथक और विच्छिन्न दिखते संदर्भ और स्थितियों के भीतर की तारतम्यता तक पहुँचते हैं। यही कविता का अभीष्ट है। कुछ कविताओं में उदय प्रकाश ने बीज से वृक्ष बनने तक की पूरी प्रक्रिया को उलट दिया है। जैसे कोई विपरीत दिशा में चलती फिल्म हो। किसी आवांछित को रोक देने की उसकी बुनियादी तड़प और मनुष्य होने की उसकी मार्मिकता! यह सब जैसे एक कल्पना-वैभव में त्राण पाता लगता है। कला इसके अतिरिक्त और कर भी क्या सकती है?"[34]**

'सुनो कारीगर' और 'अबूतर-कबूतर' इन दो काव्य संग्रहों के पश्चात् उनकी तीसरा काव्य संग्रह **'रात में हारमोनियम'** कोई चौदह वर्ष के अंतराल के बाद सन् 1998 में आया।सन् 1984 से 1998 तक लिखी गयी कुल पैंसठ(65) कविताएँ इसमें संकलित हैं। इसी बीच कहानी में जो उनकी एक विशेष जगह बनी वह अलग से उल्लेखनीय एवं विचारणीय है। इसी दौरान उनकी बहुत सारी कविताएँ महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं में प्रकाशित होकर चर्चित होती रहीं। इनमें 'उदभावना' और 'पहल' पत्रिका के कविता विशेषांक में प्रकाशित 'औरतें' और 'प्रधानमंत्री रमेश जी' विशेष उल्लेखनीय हैं। उदय प्रकाश ने जिस तरह कहानियों में कविता का

सृजनात्मक प्रयोग किया, उसी तरह परवर्ती काल में लिखी गयी कविता में भी कथातत्त्वों के साथ-साथ कथा-भाषा का प्रयोग दृढ़ता के साथ किया हैं। बदलते यथार्थ एवं बदलते सरोकार के अनुरूप काव्य-भाषा में बदलाव करना भी इनकी खासियत है। इसलिए कवि केदारनाथ सिंह जी उनके बारे में लिखते हैं कि **"रात में हारमोनियम' उदय प्रकाश का तीसरा काव्य-संग्रह है, जो एक लंबे अंतराल के बाद प्रकाशित हो रहा है। यह देखकर सुखद आश्चर्य होता है कि पिछले कुछ वर्षों में एक कथाकार के रूप में अपनी अद्वितीय पहचान बनाने वाला यह रचनाकार अपनी कथाकृतियों के समानांतर कविता की अपनी जमीन पर, एक नयी ऊर्जा के साथ निरंतर सक्रिय रहा है। 'रात में हारमोनियम' की कविताएँ उसी सक्रियता से उपजी एक जीवंत रागमाला की तरह हैं। अपने आरोह-अवरोहों की सारी गमक और स्वरों के  बीच की गहरी खामोशियों के साथ।... उदय प्रकाश के भीतर का कवि हर बार कविता को वहाँ से पकड़ने की कोशिश करता है, जहाँ उसका मूल उत्स है। इसलिए वह अपने अनुभव–लोक में हमेशा कुछ इस तरह प्रवेश करता है– "विकसित सभ्यताएँ जिस तरह लौट जाती हैं धरती के गर्भ में" या "इतिहास जिस तरह विलीन हो जाता है समूह की मिथक गाथा में", हमारी चेतना पर निरंतर जमती जाती समय की धूल को हटाकर उसके अंदर झाँकने का यह उनका अपना ढंग हैं, जहाँ यथार्थ और स्वप्न के बीच के सारे काम चलाऊ विभाजन व्यर्थ हो जाते हैं। यह कवि उदय प्रकाश की एक ऐसी काव्य युक्ति है, जिसे उन्होंने अपने लंबे आत्मसंघर्ष के भीतर से अर्जित किया है। 'मैं लौट जाऊँगा','ढेला','चन्द्रमा' या 'बचाओ' जैसी कविताओं में उनके इस काव्यकौशल के उत्कृष्ट उदाहरण देखे जा सकते हैं।"**[35]

उनके इस संग्रह की कविताओं में कवि की आशावाद से अपेक्षाएं कम हुई हैं, पर वह दुनिया में उपस्थित उपभोगवादी बाज़ार की निर्ममता को उसके सबसे भयावह रूप में, सामने रखने का साहस दिखाता है। भ्रष्टाचार, महंगाई, अपराध, दलाली, अन्याय, अत्याचार, रिश्वत-खोरी, अपसंस्कृति और व्यवस्था के चरित्र पर सीधा प्रहार करना इस संग्रह की कविताओं का मूल अभीष्ट हैं। इस संग्रह में ऐसी ढेरों कविताएँ हैं और ऐसे ढेरों उदाहरणों  को हम देख सकते हैं।

मानव जीवन को आनंद प्रदान करने वाली प्रकृति के नाना रूप, रंग, रस का महत्त्व उदय प्रकाश जानते हैं। इसीलिए अपनी कविताओं में उनके प्रति कवि ने विशेष लगाव दिखाया है। प्रकृति के हरेक जीव-जंतु के प्रति कवि के मन में संवेदना है। संवेदना का यही वह स्तर है, जो उदय प्रकाश को विशिष्ट बनाता है। जाहिर है, उनका यह व्यक्तित्व अपने समाज के साथ व्यापक स्तर पर जुड़ने और समय  के सवालों से टकराने से ही पैदा हुआ है। यह सिर्फ एक उपलब्धि नहीं है, बल्कि कविता में आम जन के जीवन को पुनर्स्थापित करने का ऐसा उपक्रम है जिसे अलग से रेखांकित करने की जरूरत है। उदय प्रकाश मार दिये जाने के डर से, यथार्थ से, आम जन से–मुँह मोड़ने वाले कवि नहीं हैं। उन्होंने अपने समय के यथार्थ को अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया हैं। वे सच्चे अर्थों में जन पक्षधर कवि हैं।

**‘एक भाषा हुआ करती है’** उदय प्रकाश का सन् 2008 में प्रकाशित चौथा काव्य-संग्रह है। यह कव्य संग्रह नेमिचंद्र जैन और कोमल कोठारी की स्मृति में सादर समर्पित है। इस संग्रह को कवि उदय प्रकाश ने तीन खण्डों में विभाजित किया हैं। पहला खण्ड ‘यह जो किसी कदर बचा-खुचा जीवन है’ दूसरा खण्ड ‘जलते हुए दृश्य में अपने पंख बचाते हुए’ और तीसरा खण्ड ‘एक भाषा हुआ करती

है' नाम से हैं। उन्होंने इस संग्रह की कविताओं में नव औपनिवेशिक समय में हो रहे उथल-पुथल को रेखांकित किया हैं। आज की अंधी-भाग-दौड़ की जिंदगी में सच्चाई और ईमानदारी के साथ जीना मुश्किल हो गया है। चारों ओर झूठ का साम्राज्य फैलता जा रहा है। समाज में हर तरफ असुरक्षा, भय, घृणा, निराशा, हताशा, अकेलापन, भूख, हड़ताल, अन्याय, अत्याचार, नशाखोरी, दलाली, विश्वासघात, निर्लज्जता आदि फैली हुई है। आज इस देश में कर्मठ, कामगर, मेहनतकश लोग अपना मेहनताना ऐसे मांगते हैं, जैसे वे कोई भिखारी हों। आज हमारे देश में समाज का राजनीतिकरण हो गया है, जहाँ वोट-बैंक की राजनीति भाई-भाई को, चाचा-भातीजा को आपस में लड़ा रही है। ऐसी विकट परिस्थिति में उदय प्रकाश जैसा सजग कवि उन चीजों से कैसे दूर रह सकता है। उन्होंने देश में फैल रही उत्तर आधुनिक संस्कृति या मॉल- संस्कृति पर चिंता व्यक्त करते हुए उसकी निंदा इसीलिए की है क्योंकि वह हमारे परम्परागत रीति-रिवाजों को हमसे छीनती चली जा रही है। आज बच्चों का बचपना नष्ट हो रहा है और उनके खान-पान में भी बदलाव आ गया है। 'इंडियन आईडल' और 'वॉयस ऑफ इंडिया' के नाम पर बच्चों का बचपन उनसे छिनता चला जा रहा है। छोटी उम्र के बच्चे प्रतिस्पर्धा की दौड़ में भागते दिखाई पड़ते हैं **"अपनी पवित्र साँसों की भाप और किलकारियों से / जो केडबरीज नहीं खाते/ जिनके नसीब में नहीं है / दून और ऋषि वेली पब्लिक स्कूल / जो बन नहीं सकते 'इंडियन आइडल' या 'वॉयस ऑफ इंडिया'/ वो बच्चियाँ जिनकी नियति में है एक दिन कोई सोनागाछी/ कोई कमाठीपुरा, कोई फॉकलैंड / या फिर आपकी कोठियों का गैरेज-कम-सर्वेंट क्वार्टर।"**[36]

उदय प्रकाश की कविता का सही मूल्यांकन उनकी कविताओं की भाषिक जागरूकता और औदात्य का जिक्र किये बिना अधूरा ही रह जायेगा। ठोस जनपक्षधरता के समानांतर कविता को उसके कवितापन की अहमियत से देखने वाले कवि उदय प्रकाश अपनी कविता को जीवन के संदर्भ के साथ जोड़ते चले जाते हैं। कविता की भाषिक संरचना के प्रति सतर्कता, बौद्धिक सजगता और सौंदर्यमूलक खोज करने की प्रवृत्ति भी उनमें निहित है। उनकी कविता की सबसे प्रमुख बात यह है कि वे अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए सौ प्रतिशत उचित शब्द चुन लेते हैं। इस प्रकार वे अपने पाठकों को शब्दार्थ के संकुचित दायरे से निकाल कर काव्यार्थ के विस्तृत ज्योति-मण्डलों की ओर ले जाते हैं । इस संदर्भ में रवींद्र कुमार दास की यह टिप्पणी अक्षरश: ठीक ही है –**"वे अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए सौ प्रतिशत उचित शब्द चुन लेते हैं, जो शब्दार्थ के दायरे में काव्यार्थ को पकड़ने का यत्न करेगा, उसके हाथ उदय प्रकाश की कविता नहीं आएगी, वह ऊबेगा, उकताएगा और अंत में बकवास करेगा।"**[37]

### 1.2.2. कहानीकार उदय प्रकाश :

उदय प्रकाश एक साथ कहानी और कविता में सक्रिय हैं। समकालीन कथा साहित्य में उदय प्रकाश का स्थान काफी ऊँचा है। बावजूद इसके वे स्वयं यह स्वीकार करते हैं कि वे मूलत: कवि हैं। इस संदर्भ में उनका कहना हैं- **"मैं मूलत: कवि हूँ। मैंने सारी कविताएँ लिखीं और चित्र भी बनाए हैं। मैंने कॉलेज समय में एक कहानी लिखी थी, जो बहुत लोकप्रिय हुई।मैं समझता हूँ कि कहानी के पाठक अधिक होते हैं और वह ज्यादा लोगों तक पहुँचती हैं। उसे लोकप्रियता अधिक मिलती है। मैं लगभग उसी तरह का कुम्हार हूँ जिसने कमीज सिल दी तो लोग उसे दर्जी समझने लगे।"**[38]

अगर हम सृजनात्मक धरातल पर उदय प्रकाश की रचनाओं को देखें तो कहानी और कविता में उनकी सशक्त उपस्थिति दर्ज है। यह तय करना बहुत ही कठिन हो जाता है कि उदय प्रकाश एक अच्छे कवि हैं या अच्छे कहानीकार हैं। हम चाहे जो कहें पर इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि उदय प्रकाश का 'कहानीकार' उनकी कविताओं में और उनका 'कवि' उनकी कहानियों में हैं। उनके गद्य में काव्यात्मकता है और उनका काव्य गद्यात्मकता का आभास दिलाता रहता है। यह भी कहा जाता है कि उदय प्रकाश की कहानियाँ उनकी कविताओं का ही विस्तार हैं। इस संदर्भ में कवि केदारनाथ सिंह ने कहा हैं- **"उदय प्रकाश की कहानियों के जादुई संसार में प्रवेश करने की सबसे विश्वसनीय कुंजी उनकी कविताओं के पास है, मुझे लगता है कि उदय के भीतर का कवि और कथाकार समानांतर नहीं बल्कि 'ओवरलैप्ड' है। हर संदर्भ अपने भयावह, विकृत और अमानवीय होते जा रहे समय का आख्यान है-कविता में अपने कलात्मक सिंटैक्स के साथ सघन और रिड्यूस होते हुए।"**[39] कवि के साथ-साथ एक कहानीकार के रूप में वे इतने ख्यात लब्ध हुए हैं कि उनकी सर्जना के अन्य पक्षों की अनदेखी तक हुई है। उदय प्रकाश ने एक कहानीकार के नाते कहानी की कथा- भाषा, वस्तु प्रविधि और समूची संरचना में तोड़-फोड़ कर जो कहानियाँ निर्मित की हैं, उनकी हिंदी में स्पष्टत: कोई परम्परा नहीं है। यह उनकी प्रतिभा की अदम्यता का और उनकी यथार्थ को भेदने वाली अंतर्यामी दृष्टि का ही परिणाम है कि वे ऐसी कहानियाँ दे पाये हैं, जिनसे किसी को भी ईर्ष्या हो सकती है। वे अपनी कहानी के क्षेत्र में सदा-सर्वदा रहस्य और रोमांच भरी पहेली की तरह रहे हैं एवं उनकी रचना-प्रक्रिया को लेकर तरह-तरह के सवाल उठते रहे हैं। उदय प्रकाश ने अपने समय के सच को अपनी कहानियों में एक नई भाषा दी है। अपने समय के यथार्थ पर उनकी नजर बड़ी पैनी है। अपनी उत्तम

कोटि की दृष्टि के कारण, वे अपने संसार का अध्ययन अत्यन्त सूक्ष्मता से करते हैं और समय-समाज के प्रति सबको सचेत करना और व्यवस्था के सबसे वंचित आदमी के लिए न्याय की माँग करना उनके रचनाकार का लक्ष्य हो जाता है। उदय प्रकाश की कहानियों को समझने की कुंजी है अपने समय की सही पहचान। उस उत्तर औपनिवेशिक दौर की पहचान जहाँ राजनीति ने सब कुछ अधिगृहीत कर लिया है। भूमंडलीकरण और उदारीकरण की प्रक्रिया में 'सत्ता और पूंजी' के नये समीकरण बनने लगे है, जिसमें आम अदमी के लिए असुरक्षा, भय और लाचारी के सिवा कोई विकल्प ही नहीं बचा है। ऐसे में उदय प्रकाश अपनी कहानियों में अपने समय और अतीत की ऐसी व्याख्याएँ करते हैं कि वह हमारे अपने समय से संवाद करने का अनुक्रम बनता है। सत्ता के विराट कैनवास के बरअक्स हम अपनी और उस जनसाधारण की कथा पढ़ने लगते हैं, जो कितनी ही बार सत्ता और संस्था की ताकत के समक्ष खुद को विवश-बौना महसूस करता है। वह बार-बार उसमें टूटता-गिरता है लेकिन पूरी तरह हारता नहीं, हाथियार नहीं डालता। वह किसी तरह अपनी भीतरी शक्ति इकट्ठा कर तमाम दबावों के बावजूद अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करता है, अपनी जमीन पर खड़ा रहता है। हाशिये पर खड़े आम आदमी की यह टकराहट उदय प्रकाश की लगभग सभी कहानियों में मौजूद है। इस संदर्भ में केदारनाथ सिंह ने बहुत ही सही कहा हैं- "**उदय प्रकाश की कहानियों के जादुई संसार में प्रवेश करने की सबसे विश्वसनीय कुंजी उनकी कविताओं के पास है।**"[40]

उदय प्रकाश की कथा-साहित्य के क्षेत्र में यात्रा सन् 1967 ई॰ में उनके महाविद्यालय की पत्रिका में छपी कहानी 'बिजली का बल्ब और मौत का फासला' से शुरू होती है और तब से लेखन का यह सिलसिला लगातार जारी हैं, जिसमें

उन्होंने हिंदी को अबतक नौ कहानी-संग्रह दिए हैं **'दरियाई घोड़ा' (1982), 'तिरिछ'(1990), 'और अंत में प्रार्थना'(1994), 'पॉल गोमरा का स्कूटर' (1997), 'पीली छतरी वाली लड़की'(2001),'दत्तात्रेय के दु:ख'(2002), 'मोहन दास'(2005), 'अरेवा-परेवा'(2006) और 'मेंगोसिल' (2006)**। गौरतलब है कि उनके तमाम कहानी संग्रहों में जीवन यथार्थ बदलती हुई परिस्थितियों में उपस्थित हुआ है, पर तत्संग रचना-प्रक्रिया में परिवर्तन और विधागत ढाँचे में आये बदलावों की पहचान भी उनके द्वारा हो जाती है।

उदय प्रकाश का पहला कहानी संग्रह है **'दरियाई घो**ड़ा' जो सन् 1982 में वाणी प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। इस कहानी संग्रह में 'मूँगा, धागा और आम का बौर', 'दरियाई घोड़ा', 'मौसाजी', 'ज्ञ, जेड, अलिफ, जगतपति और कर्फ्यू', 'पुतला', 'दद्दू तिवारी: गणनाधिकारी' और 'टेपचू' ये सात कहानियाँ हैं। इन कहानियों के कथ्य आईने की तरह एकदम साफ है। उन्होंने अपनी इन कहानियों के कथ्य गँवई अनगढ़ छोरों से उठाये हैं तो दूसरी ओर ठेठ शहरी जीवन की निस्संगता, आजनबीपन और अमानवीयता को भी उन्होंने पूरी शिद्दत के साथ समेटा हैं। आज तकनीकी उत्कर्ष की छाया-चित्र, यह भयावह पूंजीवादी दुनिया और कर्कश हो गये बाज़ार में भी उदय प्रकाश उस मनुष्य को खोज कर ले आते हैं, जो जिंदा बने रहने की जद्दोजहद में लगा रहता है और तमाम समझौतों एवं बेहाल करती स्थितियों के बीच भी वह आदमी बना रहने की कशमकश में लगा हुआ है।

उदय प्रकाश का दूसरा सबसे चर्चित एवं बेमिसाल कहानी-संग्रह है 'तिरिछ'। यह कहानी-संग्रह सन् 2001 में वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित

हुआ था। इस कहानी संग्रह में नौ कहानियाँ हैं, उनमें से एक कहानी है 'दद्दू तिवारी: गणनाधिकारी'। यह कहानी 'दरियाई घोड़ा' में प्रकाशित है। इस संग्रह की पहली तीन कहानियाँ 'नेलकटर', 'डिबिया' और 'अपराध' रचनाकार की आत्मकथा पर आधारित हैं। जाहिर है इनका संबंध आलोच्य कहानीकार के निजी जीवन से है और उनके घर-परिवार के लोगों से है। इसके बाद 'तिरिछ' कहानी है और यह इस संग्रह की बहुचर्चित एवं सर्वश्रेष्ठ कहानी है। यह अपने समय, स्वरूप, शिल्प, विन्यास और अपने अपूर्व प्रभाव के कारण एक विलक्षण कहानी है। यह कहानी अपने समय की तात्कालिकता के साथ-साथ अपने समय से बहुत आगे के भयावह और विकराल होते समय से भी हमारा परिचय कराती है। यह कहानी मनुष्य को उसकी अस्मितागत पराधीनता में क्षत-विक्षत और लहूलुहान करती है और आखिर में एक विषाद भरी विरासत पर जाकर कहानी खत्म होती है या खत्म न होकर सांप्रतिक जटिल जीवन में परिवर्तित हो जाती है। तिरिछ जो सपने में आता है और यथार्थ में प्रकट होकर पिता को काट लेता है, इस बेहद साधारण घटना को उदय प्रकाश इस कहानी में अविस्मरणीय बना देते हैं। इसके बाद 'छप्पन तोले का करधन' कहानी है। इस कहानी के केंद्र में हमारे देश की आजादी से पहले के भारतीय गाँव में रह रहा एक गरीब परिवार है, जिसमें पाँच सदस्य हैं- दादी, बड़ी बहू-अम्मा, छोटी बहू-चाची, विधवा बेटी-बुआ और किशोर। यह पूरी कहानी किशोरवय व्यक्ति की दृष्टि से लिखी गई है, जिसमें संतानों और निकट संबंधियों द्वारा प्रताड़ित और तिरस्कृत एक दादी की कातर कथा है। इसके बाद 'हिंदुस्तानी इवान दानिसोविच की जिंदगी का एक दिन' और 'दद्दू तिवारी : गणनाधिकारी' ये दोनों कहानियाँ मध्यवर्गीय सामाजिक यथार्थ की जिंदगी पर

लिखी कहानियाँ हैं। यह कहानी राम सहाय या इवान दानिसोविच (जो भी कह लें) या फिर दद्दू तिवारी-गणनाधिकारी की जिंदगी के या हमारे समाज के निम्न मध्यवर्गीय परिवार की जिंदगी के यथार्थ से संबंधित है। इस जीवन में हर दिन उतना ही डरावना है, जितना कि कहानी में वर्णित एक दिन। 'राम सजीवन की प्रेमकथा' कहानी बहुत ही मजेदार एवं एक महत्त्वपूर्ण कहानी है। यह वर्गभेद पर आधारित एक तरफ़ा प्रेम कहानी है। राम सजीवन और अनिता चांदीवाला में वर्ग भेद का फासला इतना जबरदस्त है कि उसके बीच कोई तार जुड़ ही नहीं पाता है और अंत में राम सजीवन के हिस्से में बेचारगी और खालीपन ही शेष रह जाता है। 'हीरालाल का भूत' इस कहानी संग्रह की अंतिम कहानी है। इसमें एक ऐसे आदमी के जीवन पर आधारित कथा है, जो जमींदारी प्रथा के बीच तिल-तिल कर जिंदगी जीता हुआ आखिर में बूझकर खामोश हो जाता है।

कथाकार उदय प्रकाश का तीसरा कहानी-संग्रह '..और अंत में प्रार्थना' है। इस संग्रह की कहानियों को तीन हिस्सों में रखा जा सकता हैं- आत्मकथा, छोटे-छोटे किस्से और कहानियाँ। आत्मकथा में रचनाकार ने अपने जीवन से जुड़े हुए आत्मवृत्त प्रस्तुत किए हैं। उस कहानी-संग्रह में 'आत्मकथा' के अंतर्गत रखी गई कहानियों के शीर्षक हैं 'फिल्म', 'सहायक', 'खंडित स्त्रियाँ, नेहरूजी और अस्ताचल' और 'दोपहर' आदि। इन कहानियों में कहानीकार ने अपने बचपन की मार्मिक स्मृतियां और संवेदनाओं को समेटा हैं। इसमें मृत्यु की विडंबना, दहशत, दर्द, करुणा, असहायता आदि का चित्रण है। 'छोटे-छोटे किस्से' खंड में संचित कहानियों के शीर्षक हैं–'सिर','दीवार','गंगू','नरक', 'नौकरी', 'आचार्य की कराह', 'सायरन', 'सही उत्तर', 'डर','घर','चित्र','शांति','अभिनय' आदि। इन कहानियों में व्यक्ति की

संघर्षशीलता और परेशानियों के साथ-साथ अकादमिक संस्कृति की नीति-रीति, भ्रष्टाचार, चापलूसी, आलोचना-कर्म आदि का चित्रण देखने को मिलता हैं। स्वयं उदय प्रकाश कहते हैं-**"आचार्य की कराह' या 'आचार्य की रज़ाई' दरअसल शिक्षा के संस्थानों में पनपे भ्रष्टाचरण और पतनशीलता की रूपकात्मक कथाएँ हैं।.... यह सच है कि कनाडा के मानितोबा विश्वविद्यालय के छात्रों ने एक ऐसे प्रोफेसर को अपने यहाँ खोजा था और इलाहाबाद तथा अन्य विश्वविद्यालयों में भी ऐसी ही स्थिति है। देखिए मेरी कहानी के 'आचार्य' हमारे समय और यथार्थ के पतनशील संस्थानों के एक प्रतिनिधि चरित्र हैं। प्रतिभाओं के उन्मूलन, जातिवाद, भाई-भतीजावाद षड़यंत्र और अपने चेलों को पंजीरी-पद वितरण का काम कोई एक मठाधीश नहीं कर रहा है।"**[41] 'कहानियाँ' शीर्षक के अन्तर्गत 'थर्ड डिग्री' और '..और अंत में प्रार्थना' दोनों दो भिन्न तरह की रचनाएँ हैं। 'थर्ड डिग्री' कहानी में रचनाकार उदय प्रकाश चोरी की एक घटना का विवरण देते हुए हमारे समाज के कुछ ऐसे अंतर्विरोधों को उजागर करते हैं, जो प्राय: यथार्थ की सतह पर समझ में नहीं आता। दूसरी ओर 'और अंत में प्रार्थना' कहानी उससे भिन्न है। कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर यह भिन्न कहानी है। आज भी रचनाकार को यह चिंता हैरान करती रहती है कि उत्तर औपनिवेशिक युग में राजनीतिक ढाँचे के भीतर जो अंग्रेजों की दमन और शोषणाधारित नीतियों के साथ-साथ फूट डालो, राज करो की नीति थी, उससे हमारा देश आजाद नहीं हो पाया है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था के नाम पर केवल सत्ताकामी राजनीतिज्ञों, भ्रष्ट नौकरशाही तथा छल-बल से लैस गुंडों का तंत्र ही विकसित हुआ है। 'और अंत में प्रार्थना' कहानी में ऐसी ही चिंता की अभिव्यक्ति है।

'पॉल गोमरा का स्कूटर' उदय प्रकाश का चौथा कहानी-संग्रह है। इस संग्रह में 'छतरियाँ', 'पॉल गोमरा का स्कूटर', 'भाई का सत्याग्रह' और 'वॉरेन हेस्टिंग्स का साँड़' आदि कहानियाँ संकलित हैं। इस संग्रह की कहानियाँ बहुचर्चित और अत्यंत लोकप्रिय रही हैं। इस संग्रह की प्रथम कहानी 'छतरियाँ' दो दुनियाँ के प्रेम की विफलता की कहानी है। 'भाई का सत्याग्रह' कहानी में सामाजिक व्यवस्था को आधार बनाया गया है, जिसमें भाई की करुण स्थिति और पुलिस प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार और अपराधियों से साँठ-गाँठ को व्यक्त किया गया है। इस संग्रह की अत्यंत चर्चित कहानी 'पॉल गोमरा का स्कूटर' आधुनिक भावबोध पर लिखी गई कहानी है। इसमें रामगोपाल सक्सेना से पॉल गोमरा बने हिंदी के एक कवि एक छोटे से अखबार के दफ्तर  में मुलाज़िम थे। वे सिद्धांतों और विचारों से क्रांति और परिवर्तन के प्रबल समर्थक थे। यह वह समय था, जब समाज के हर क्षेत्र में तेजी से परिवर्तन हो रहा था। संसार से अच्छी चीज़ें तेजी से विलुप्त हो रहीं थीं। अन्य कई कहानियों की तरह उनकी इस कहानी में भी बाज़ार है। कहानीकार उदय प्रकाश ने इस कहानी के माध्यम से बढ़ती बाज़ार की शक्ति पर चिंता व्यक्त की है। असहाय और विपन्न लोगों की पक्षधरता उनकी इस कहनी में ध्वनित होती है। इस संग्रह की अंतिम एवं बहुचर्चित कहानी है 'वॉरेन हेंस्टिंग्स का साँड़'। इस कहानी में दो-ढाई सौ साल पुराना इतिहास है, अंग्रेजी साम्राज्यवाद के पांव पसारते साम्राज्य का इतिहास । वह दरअसल पूरी तरह इतिहास भी नहीं है क्योंकि यह कहानी है, पर असल में तो यह कहानी भी नहीं है; कारण यह है कि यह कहानी के परम्परागत ढाँचे को तोड़ती है। सत्य की खोज के लिए  यह यात्रा के भीतर की अंतर्यात्रा है। जैसा कि उदय प्रकाश अपनी कहानी 'वारेन हेस्टिंग्स का साँड़' की

शुरुआती पंक्तियों में यह स्पष्ट करते हुए कहते हैं- **"असल में जब इतिहास में स्वप्न, यथार्थ में कल्पना, तथ्य में फैंटेसी और अतीत में भविष्य को मिलाया जाता है तो आख्यान में लीला शुरू होती है और एक ऐसी माया का जन्म होता है, जिसका साक्षात्कार सत्य की खोज की ओर एक यात्रा ही है। इसीलिए हर लीला और प्रत्येक माया उतनी ही सच होती है, जितना स्वयं इतिहास।"**[42] मोटे तौर पर इसे आख्यान कहा जा सकता है। जो सत्य पहले से उजागर है, उसके भीतर एक और सत्य की खोज की जाती है और आख्यान में लीला शुरू हो जाती है। इस तरह इसमें अनेक आयाम हैं और इतने आयामों को एक साथ व्यक्त करने की क्षमता केवल उदय प्रकाश में ही हो सकती है।

'पीली छतरी वाली लड़की' उदय प्रकाश की अत्यंत लोकप्रिय 149 पृष्ठों में फैली एक लम्बी कहानी है। इस कहानी में सिर्फ प्रेम नहीं है, वह तो कहानी का हिस्सा भर है। उक्त कहानी में आज के औद्योगिक पूंजीवाद पर, धनाढ्यों पर, अतिविकसित और अविकसित देशों पर, आदिवासियों की दशा और उनकी उपेक्षा पर, गुण्डों-मवालियों के नेताओं से संम्बंधों पर, पूँजीपतियों और सत्ता के गठजोड़ों पर, देश की सवर्ण मानसिकता पर गांधी और बुद्ध पर, राजनैतिक हिंसा पर गहरे विमर्श हैं। 'पीली छतरी वाली लड़की' कहानी हिंसा, शोषण और पूंजी के फंदों में फंसे साधारण आदमी के संघर्षरत जीवन जीने की छटपटाहट की कहानी हैं। जिसमें जातिवाद, पक्षपात, भ्रष्टाचार, वर्गभेद के कई आयाम हैं और उनमें पिसते आम नागरिकों और आम छात्रों की पीड़ाएँ हैं।

उदय प्रकाश का अगला कहानी संग्रह है 'दत्तात्रेय के दु:ख'। इस कहानी संग्रह में कुल 16 कहानियाँ संकलित हैं, जो इस प्रकार हैं-'दत्तात्रेय के दुख',

'इतिहास और समाजशास्त्र', 'असत्य का भौतिक प्रमाण', 'हत्या', 'दिल्ली','मार्क्स का वाक्य','पूंछ में पटाखा','उत्तर-आधुनिक उपभोक्तावाद', 'विनायक का अकेलापन', 'मिलना-जुलना', 'खराब कलम', 'श्रीमान् भाववादी', 'आचार्य की रजाई','दिल्ली की दीवार','साईकिल' और 'अरेबा-परेबा'। उदय प्रकाश ने गाँव में बिताये गये अपने बचपन के दिनों में जो संस्कार अर्जित किए थे और बाद में दिल्ली जैसे महानगर में रहते हुए जो अनुभव एकट्ठा किए, यह कहानी-संग्रह उन सबको ताने-बाने के रूप में अभिव्यक्त करता है। इन सभी कहानियों में दत्तात्रेय का विद्यमान होना इस बात का सबूत है कि इन कहानियों में वर्णित दुख सिर्फ उनका दुख नहीं है, बल्कि आम भारतीय की इच्छाओं का विस्फोट है। उदय प्रकाश ने उक्त कहानी संग्रह में जो कहानियाँ लिखी हैं, ये बहुत बड़ी पीड़ा और गहरी चिंता से भरी हुई हैं क्योंकि संसार का हर कोमल, पवित्र निष्कवच और सुंदर जीवन इस समय गहरे खतरे के बीच खड़ा है।

उदय प्रकाश की कहानी 'मोहन दास' एक महाकाव्यात्मक सम्भावना से भरी हुई कहानी है। इसमें सर्वहारा दलित की करुण गाथा है। उदय प्रकाश प्राय: अपनी कहानियों में कुशलतापूर्वक फैण्टेसी का प्रयोग करते हैं और यथार्थ के साथ घुल-मिलकर वह उनके रचनात्मक वैभव का एक अंग बन जाती है। यथा 'तिरिछ' कहानी में उन्होंने तिरिछ को ही एक मिथ के रूप में गढ़ा है। 'वॉरेन हेस्टिंग्स का साँड़' में साँड़ का रूपक गढ़ा है। मोहन दास कहानी में जज को भी मुक्तिबोध बना दिया है। परसाई यहाँ पब्लिक प्रासिक्यूटर बने हैं और शमशेर बहादुर सिंह अनूपपुर के एस. एस. पी. हैं। कहानी के नायक मोहन दास का नामकरण मोहन दास करमचंद गाँधी के नाम से एक संगति रखता है। उसका गाँव पुरवनरा भी

पोरबन्दर से साम्य रखता है, उनके पिता करमचंद की जगह काबादास हैं और इसी तरह माँ पुतलीबाई हैं और पत्नी कस्तूरबा की जगह कस्तूरी हैं। यहाँ पर मोहन दास आज के बदलते समय की उत्तर-आधुनिक संस्कृति में हाशिये पर खड़ा आखिरी आदमी है, जिसकी हैसियत की व्याख्या यह कहानी पूरी शिद्दत से करती है और करुणा का एक संसार रच डालती है।

'मैंगोसिल' उदय प्रकाश की एक महत्त्वपूर्ण कहानी है। यह कहानी आम आदमी के अभिशप्त जीवन ज़ीने की विवशता का आख्यान है। यह आदमी आज चाहे नगरों, महानगरों के 'स्लमों' में रहने वाला हो अथवा गँवई किसान या मजदूर हो, वह आदमी इस कहानी के मूल चरित्र चंद्रकांत थोराट और उसकी पत्नी शोभा के तरह ही है क्योंकि उसके जीवन में सिर्फ उत्पीड़न और संघर्ष की कहानी ही है। इस कहानी में भी फैंटेसी के रूप में चंद्रकांत थोराट के बड़े बेटे सूरी को वह रहस्यमय बीमारी-मैंगोसिल है, जिसमें बच्चे के सिर का वजन और आकार बढ़ता ही जाता है। बच्चे का दिमाग अपनी आयु की तुलना में अतिविकसित है। दरअसल आज अनियंत्रित विकास की अंधी दौड़ में लोगों की एक बड़ी आबादी दिक् और काल में बाहर फेंक दी गई है। लेकिन वह आबादी अपनी तमाम असमर्थताओं, कमजोरियों और मजबूरियों के बावजूद विकास की घातक चालों को समझ रही है और उसका दिमाग समय की गति के साथ स्पंदित हो रहा है। यह बात और है कि इस विकास को सहने और ढोने की ताकत उनमें नहीं है। इसी वजह से वे लगातार पिछड़ते चले जा रहे हैं। इस कहानी का अंत पाठकों को हिलाकर रख देता है। हो सकता है कि यह अंत सर्वभक्षी पूँजीवादी विकास के अंत की सूचना हो, जिसमें नए सृजन के बीज छुपे हैं। इस प्रकार यह कहानी कथित लोक-कल्याणकारी सत्ता के चेहरे और भूमण्डलीय अर्थ-जगत के पाखण्ड को उजागर करती है। यह उन विवशताओं और मजबूरियों को भी उजागर करती है, जो आम आदमी की नियति

बना दी गई हैं। इस प्रकार यह कहानी आदमी की जिजीविषताओं का जीवन्त दस्तावेज़ है।

## 1.2.3. उदय प्रकाश की प्रकाशित कृतियाँ:

उदय प्रकाश जी ने अपनी लेखनी काव्य से शुरू की और लिखने का यह सिलसिला चलता ही गया और अब तक जारी हैं । उन्होंने कविता से लेकर कहानियाँ, निबंध, अनुवाद एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया लेखन कार्य में अपनी रुचि दिखाई और उन्हें सार्थकता प्रदान की। उन्हें आज विविध विधाओं में एक महत्त्वपूर्ण स्थान हिंदी साहित्य में हासिल है। उनके द्वारा समय-समय पर लिखी गई और प्रकाशित की गई सभी रचनाओं की क्रमश: तालिका निम्नवत है-(1)सुनो कारीगर (काव्य) सन् 1980, (2)दरियाई घोड़ा (कहानी संग्रह) सन् 1982, (3) अबूतर कबूतर (काव्य) सन् 1984, (4)तिरिछ (कहानी संग्रह) सन् 1990, (5)और अंत में प्रार्थना (कहानी संग्रह) सन् 1994, (6) पॉल गोमरा का स्कूटर (कहानी संग्रह) सन् 1997, (7) रात में हारमोनियम (कविता संग्रह) सन् 1998, (8)ईश्वर की आँख (आलोचना) सन् 1999, (9) पीली छतरी वाली लड़की (लम्बी कहानी) सन् 2001, (10)दत्तात्रेय के दुख (कहानी संग्रह) सन् 2002, (11)मोहन दास (लघु उपन्यास/लंबी कहानी) सन् 2006, (12) अरेबा परेबा (कहानी संग्रह) सन् 2006, (13)नई सदी का पंचतंत्र (आलोचना) सन् 2008, (14) अपनी उनकी बात (साक्षात्कार) सन् 2008, (15) एक भाषा हुआ करती है (कविता संग्रह) सन् 2009, (16) प्रतिनिधि कहानियाँ (दस कहानियाँ) सन् 2011, (17) पचास कविताएँ (नयी सदी के लिए चयन) सन् 2012, (18) कवि ने कहा (चुनी हुई कविताएँ) सन् 2014

## 1.2.4. अनुवाद कार्य :

उदय प्रकाश ने स्वतंत्र लेखन के अलावा कुछ अनुवाद-कार्य भी किए हैं, जो इस प्रकार हैं - (1)कला अनुभव –1982 (मूल लेखन –प्रो. हरियन्न की सौंदर्यशास्त्रीय पुस्तक का अनुवाद), (2) अमृतसर–इंदिरा गाँधी की आखिरी लड़ाई – 1985 (मूल लेखक बी.बी.सी. संवाददाता मार्क टली और सतीश जैकब), (3) रोम्याँ रोलाज़ इंडिया, (4) लाल घास पर नीले घोड़े 1988 (मिखाईल शात्रोव के रूसी नाटक का अनुवाद और रूपांतर) और (5) एक पुरुष डेढ़ पुरुष (प्रसन्ना के कन्नड़ नाटक का अनुवाद)।

## 1.2.5. उदय प्रकाश के ग्रन्थों का अनुवाद :

उदय प्रकाश के मूल ग्रन्थों का अनुवाद विभिन्न विदेशी भाषाओं एवं -भारत की विभिन्न भाषाओं में अनेक विद्वानों के द्वारा हुआ है जो इस प्रकार है (1) रेज रेवेलरी एंड रोमान्स (अंग्रेजी), सृष्टि पब्लिशर्स, नई दिल्ली,2002 , (2) (जर्मन)डेर गोल्डेन गरटेल,–शॉर्ट (3) शॉर्ट लांग शॉट्स (अंग्रेजी),2003,द (4) (अंग्रेजी) गर्ल विद द गोल्डेन पारासोल,2008 ,देस मेडचेन मिट डेन गेल (5) (जर्मन)बेन स्कर्म,(जर्मन) अंद एम इंडे एन गेबेट (6) ,तिरिछ अनी इतर (7) (मराठी) कथा,(मराठी) अरेबा परेबा (8) , (9) मोहन दास(मराठी) , (10) मोहन दास(कन्नड़) , (11) मोहन दास(ओड़िया) , (12) मोहन दास(पंजाबी) , (13)मोहन दास(अंग्रेजी) , (14) मोहन दास(उर्दू) , (15) मोहन दास (नेपाली), (16) अभिनय(स्पेनिश) ,(जपानी) चुनी हुई कहानियाँ (17) , (18)

(हंगेरियन) वारेन हेस्टिंग्स का साँड़,दिल्ली का ) वाल्स ऑफ देल्ही (19) सम्मान के लिए .सी.एस.से प्रकाशित और डी.ए.डब्ल्यू.ऑस्ट्रेलिया के यू (दीवार चयनित।

## 1.2.6. फिल्म और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में योगदान :

उदय प्रकाश का फिल्म और मीडिया में इलेक्ट्रॉनिक काफी उल्लेखनीय योगदान रहा हैं। फिल्म और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में इनके द्वारा दिये गए योगदान का क्रम इस प्रकार है-

(1)सन् में अपनी कहानियों पर बनी फिल्म 1987'उपरांत' में स्क्रिप्ट और डायलॉग लेखन, जो ताशकंद और जर्मनी में आयोजित अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में दिखाई गयी।

(2)सन् में मिकिहेल शेटरोव के अनूदित नाटक 1988'लाल घास पर नीले घोड़े' के लिए स्क्रिप्ट लेखन का कार्य किया।

(3)पंजाब की समस्याओं पर आधारित डाक्यूमेंट्री के लिए स्क्रिप्ट लेखन, जिसका प्रसारण दिसंबर,सन् में हुआ 1989।

(4)हिंदी अकादमी, नई दिल्ली द्वारा डॉरामविलास शर्मा पर बनी फिल्म के निर्माता, निर्देशक और स्क्रिप्ट लेखक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन।

(5) कृषि कथा – कृषि मंत्रालय के लिए भारत में कृषि के इतिहास पर धारावाहिक का निर्माण, सन् 1997 ।

(6)साहित्य अकादेमी के लिए धर्मवीर भारती पर बनाई गयी फिल्म के निर्माता, निर्देशक और स्क्रिप्ट लेखक रहे, सन् 1999।

(7)ताना-बाना – प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया के लिए सांस्कृतिक पत्रिका का प्रकाशन।

(8)विजयदान देथा – साहित्य अकादमी के लिए निर्मित फिल्म में निर्माता, निर्देशक और स्क्रिप्ट लेखक की भूमिका निभायी, सन् 2000।

(9)विज्जी का खजाना – विजयदान देथा की दस कहानियों पर दूरदर्शन के लिए फिल्म निर्माण कार्य, सन् 2002 ।

(10) भारतेंदु हरिश्चंद्र पर साहित्य अकादमी के लिए निर्मित फिल्म के निर्माता, निर्देशक और पटकथा लेखक रहे, सन् 2008।

(11) इन्दु टी के लिए अपनी कहानी .वी.'पीली छतरी वाली लड़की' पर आधारित कड़ियों के धारावाहिक के लिए स्क्रिप्ट लेखन और 26 स्क्रिनप्ले की भूमिका कानिर्वहन किया।

(12) द प्रोफेशनल्स –आई फिल्म लेखन। .वी.टी .

(13) अपनी लम्बी कहानी 'मोहन दास' पर आधारित फिल्म के लिए डायलॉग लेखन और स्क्रिनप्ले की भूमिका का निर्वहन।

## 1.2.7. जीविका उपार्जन और पद- ग्रहण :

उदय प्रकाश अपने पारिवारिक भरण-पोषण के लिए या जीविका उपार्जन हेतु इधर-उधर भटकते रहे और जीवन भर अस्थायी नौकरी के साथ आर्थिक तंगियों से जूझते रहे हैं। उनके जीवन का यह भटकाव कमोवेश आज भी जारी हैं। भटकाव की इस प्रतिछवि का पता जीविका उपार्जन हेतु विभिन्न समय और भिन्न-भिन्न स्थानों पर उनके द्वारा किए गए कार्य से ही ज्ञात होता है।

- उदय प्रकाश सन् तक जवाहरलाल नेह .ई 80-1978रू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के इम्फालस्थित से (मणिपुर) ंटर फॉर पोस्ट ग्रेजुएट स्टडीज में सहायक अध्यापक के रूप में कार्यरत रहे।
- विशेष कार्य अधिकारी– संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश सरकार, भोपाल में सन् भार सँभाला-तक कार्य 82–1980।
- 'पूर्वग्रह', विख्यात आलोचना त्रैमासिकी पत्रिका के सहायक संपादक के रूप में कार्यरत रहे, जिसके प्रधान सम्पादकअशोक वाजपेयी थे -, सन् 82–1980 (प्रति नियुक्ति पर)।
- दिनमान के उपसम्पादक (टाइम्स ऑफ इंडिया समूह का समाचार साप्ताहिक) रहे, नई दिल्ली सन् तक। 90 –1982
- टाइम्स रिसर्च फाउंडेशन, स्कूल ऑफ सोशल जर्नलिज्म टाइम्स ऑफ इंडिया ) (ट्रेनिंग इस्टिट्यूट, नई दिल्ली सन् में असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप 1987में कार्यरत रहे।
- आ .,(स्वतंत्र टेलीविजन) .वी टी नई दिल्ली में सन् में विचार और .ई 1989 पटकथा प्रमुख रहे।
- संडे मेल, समाचार साप्ताहिक, नई दिल्ली, सन् 1990 में वरिष्ठ सहायक सम्पादक रहे।
- आलेख और विचार प्रमुख, प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया (वी.टी), नई दिल्ली, सन् 1991-92।
- निर्देशन, पटकथा लेखन और शोधार्थी – भारत में कृषि के इतिहास को दर्शाने वाले धारावाहिक,'**कृषि कथा**' का पंद्रह कड़ियों में निर्माण –प्रायोजक कृषि

मंत्रालय, भारत सरकार, निर्माता–सिने इंडिया इंटरनेशनल -डी-डी -प्रसारण), रविवार (:बजे प्रात 10.30 सन् 1997 ।

- **एमीनेन्स',** सन् 2000 में संपादक के रूप में कार्य किया (अंग्रेजी मासिक पत्रिका) जो जो बंगलौर से निकलती।

## 1.2.8. अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ, व्याख्यान और यात्राएँ:

- अंतर्राष्ट्रीय काव्य उत्सव, रोटरडैम, नीदरलैंड में एक कवि के रूप में भागीदारी और कविता ,फिल्मोत्सव में व्याख्यान-सन्2003 ।
- प्रसिद्ध भाषाविद् Prof. Luther Lutze से मिलने के लिए तथा बर्लिन के Theatre Ensemble को देखने के लिए जर्मनी की यात्रा सन् 2004 ।
- विश्व पुस्तक मेले, फ्रैंकफर्ट में भाग लेने के लिए जर्मनी में यात्रा सन् 2006।
- न्यूयॉर्क में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में भागीदारी सन् 2007।
- अंतर्राष्ट्रीय साहित्य महोत्सव में भाग लेने के लिए ट्यूरिनो, इटली की यात्रा सन् 2008।
- साउथ कोरिया में आयोजित वैश्वीकरण' के दौर में साहित्य' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय साहित्य सम्मेलन में भागीदारी व पत्रपाठ- सन् 2008।
- आगरा में आयोजित सार्क देशों के साहित्य महोत्सव में आधार व्याख्यान, सन् 2009।
- विश्व पुस्तक मेला, फ्रैंकफर्ट भागीदारी और तीन अंतर्राष्ट्रीय संगोष्टियों में व्याख्यान– 2009
- जर्मनी के शहरों जैसे बर्लिन 20, हाइडेलवर्ग, गौट्टिगेन बुर्जवर्ग, बॉर्न, टबलीन और म्युनिक में स्थित जर्मन विश्वविद्यालयों में व्याख्यान ,सन्2009 ।

❖ कार्लटन कॉलेज, मीनेसोता, आमेरिका में 'Lindesmith Lecture' देने के लिए आमंत्रित (2012 मई)।

**निष्कर्षत:** यह कहा जा सकता है कि उदय प्रकाश का व्यक्ति और कलाकार एक दूसरे के पूरक हैं। वे अपने समय और समाज से अपनी रचना के लिए जीवद्रव्य प्राप्त करते हैं- रचना के 'फॉर्म' और 'कंटेंट' में बदलाव के मामले में तो वे हिंदी के चेखब ही हैं। अपने समय में अपने समय के आरपार देखने की क-ला बिरले ही लोगों के पास होती है, उदय प्रकाश का रचनाकार उन अन्यतम लोगों में से एक है। वे बेशक हिंदी ही नहीं विश्व साहित्य के लिए एक अमूल्य निधि हैं।

## संदर्भ ग्रंथ :


1 प्रकाश, उदय, तिरिछ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं- 2008, पृष्ठ –16

2 प्रकाश, उदय, ईश्वर की आंख, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं- 2005, पृष्ठ –11

3 वही, पृष्ठ – 14

4 वही, पृष्ठ – 15

5 महाजन, डॉ. देवकी नंदन, समकालीन कहानीकार उदय प्रकाश, विद्या प्रकाशन, कानपुर, सं- 2012, पृष्ठ- 48

6 प्रकाश, उदय, तिरिछ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं- 2008, पृष्ठ- 11

7 वही, पृष्ठ- 13

8 वही, पृष्ठ- 14

9 प्रकाश, उदय, ईश्वर की आंख, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.- 2005, पृष्ठ -14

10 .वही, पृष्ठ –14

11 . प्रकाश, उदय,दरियाई घोड़ा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.- 2006, पृष्ठ - 20

12 . वही, पृष्ठ – 22

13 . वही, पृष्ठ – 26

14 . वही, पृष्ठ – 33

15. वही, पृष्ठ – 34

16. वही, पृष्ठ – 37

17. 'आजम', डॉ. वीरेंद्र एवं अन्य, शीतल वाणी, अगस्त-अक्तूबर 2012, सहारानपुर (उ.प्र.), पृ.- 142

18. प्रकाश, उदय, ईश्वर की आंख, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.- 2005, पृष्ठ- 15

19. वही, पृष्ठ- 13

20. वही, पृष्ठ- 13

21. वही, पृष्ठ- 13-14

22. वही, पृष्ठ- 15

23. वही, पृष्ठ- 15

24. वही, पृष्ठ- 15

25. वही, पृष्ठ- 15

26. वही, पृष्ठ- 15

27. 'आजम', डॉ. वीरेंद्र एवं अन्य, शीतल वाणी, अगस्त-अक्तूबर 2012, सहारानपुर (उ.प्र.), पृ. 67-68

28. श्रोत्रिय, प्रभाकर, पूर्वग्रह- अंक -125, भारत भवन न्यास, भोपाल, अप्रैल- जून, 2009, पृ. 45-46

29. सिंह, डॉ. धर्मेन्द्र प्रताप, नव उपनिवेशवाद और उदय प्रकाश का साहित्य, चिंतन प्रकाशन,कानपुर, सं. – 2016, पृ.57

30. श्रोत्रिय, प्रभाकर, पूर्वग्रह- अंक-125, भारत भवन न्यास, भोपाल, अप्रैल-जून, 2009, पृ. 39

31. वही,पृ.40

32. प्रकाश, उदय, अबूतर कबूतर, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली,सं- 2005, पृ.71-72

33. वही, पृ.79-80

34.वही, पृ.- फ्लैप से

35. प्रकाश, उदय, रात में हारमोनियम, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, सं.- 2009 पृ.143

36. उदय प्रकाश, एक भाषा हुआ करती है, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, सं-2011, पृ.15

37. श्रोत्रिय, प्रभाकर,पूर्वग्रह- अंक -125, भारत भवन न्यास, भोपाल, अप्रैल-जून, 2009, पृ.55

38. 'आजम', डॉ. वीरेंद्र एवं अन्य, शीतल वाणी, अगस्त-अक्तूबर 2012, सहारनपुर(उ.प्र.) पृ.176

39. वही, पृ.176

40. प्रकाश, उदय, रात में हारमोनियम, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, सं. 2009, पृष्ठ-फ्लैप से

41. प्रकाश, उदय, अपनी उनकी बात, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, सं. 2008, पृ. 84-85

42. प्रकाश, उदय, पॉल गोमरा का स्कूटर, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, सं. 2004, पृ.-103